विशद वीतराग शासन जयवंत हो

विशद द्रोणगिरि जिन आराधना

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

****

विषय यहाँ देखे

कृतिकार-1, परिचय-2

मंगलाष्टक-3, प्रतिष्ठा विधि-5

अभिषेक पाठ-9, शांतिधारा-14

विनय पाठ-18, पूजा विधि-19

मूलनायक सहित पूजन-21, आदिनाथ पूजन-26

मुनिसुव्रत पूजन-29, श्री द्रोणगिरि पूजन-32

श्री त्रिकालवर्ती पूजन-37,श्री शांति,कुंथु,अरहनाथ पूजन-47

महार्घ्य-52, शांतिपाठ विसर्जन-53

द्रोणगिरि चालीसा-54, द्रोणगिरि आरती-56

श्री आदिनाथ आरती-57, श्री शांतिनाथ आरती-58

श्री शांति,कुंथु,अरहनाथ आरती-59

श्री गुरुदत्त जिनेन्द्र की आरती-60

द्रोणगिरि गौरव गाथा-61, मस्तकाभिषेक भजन-62

कृति – विशद द्रोणगिरि जिन आराधना

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – तृतीय-2024 ● प्रतियाँ :1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज,मुनि श्री 108 विशुभसागरजी महाराज, मुनि श्री 108 विभोरसागरजी महाराज
ब्र. प्रदीप भैया 7568840873

सहयोग – आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था दीदी (9660996425) सपना दीदी (9829127533), आरती दीदी (8700876822)

कंपोजिग – ब्र. आस्था दीदी (9660996425)

प्राप्ति स्थल – 1. सुरेश जी सेठी, पी-958, गली नं. 3, शांति नगर, जयपुर मो. 9413336017

2. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301

3. नीरज जैन लखनऊ9451251308

4. जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली मो. 9818115971

जयकुमार जैन
मेड़ता वाले
ऊंझा गुजरात
9825079171

पुण्यार्जक परिवार

श्री धवलकुमार जैन
महावीर एयरपोर्ट रोड
दमन(यू.टी.)396210
9825603131

Created by Universal Document Converter

कण-कण पावन जिस भूमि का ,सिद्धभूमि कहलाए

भारत देश धर्म निरपेक्ष देश है जिसमें म. प्र. का अपना अलग ही स्थान है। मध्यप्रदेश में जैन धर्मावलंबी अधिक निवास करते हैं जिनका नारा है'अहिंसा परमोधर्मः' अर्थात् अहिंसा ही परम धर्म है। जैनधर्म में इस अवसर्पिणी काल के चतुर्थ काल के अंत में अंतिम तीर्थंकर हुए जिनकी दिव्य देशना से सारा विश्व चल रहा है। किंतु समय व्यतीत होने पर उसमें विकृति आई और वर्तमान में अनेक सम्प्रदाय बन गये जो अपने आपको धर्म मानने लगे। हिंदू , मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई इत्यादि जबकि जैनधर्म अनादि से चल रहा है।

जैनधर्म के साधक निर्ग्रंथ वीतरागता के धारी होकर कर्म क्षय करके मोक्ष प्राप्त करते हैं। पुनः वे संसार में नहीं आते। शाश्वत मुक्ती तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी है किंतु हुण्डावसर्पिणी काल दोष से भी साधक कर्म क्षय करके दोष से अन्य स्थान से भी साधक कर्म क्षय करके मोक्ष प्राप्त किए हैं। उनमें एक है सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि जहाँ से श्री गुरुदत्तादि **साढे** तीन कोटि मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया। आज भी वहाँ पर अनेक जिनालय बने हैं तथा सिद्धभूमि की वंदना करने लोग दूर-दूर से आते हैं। गुरुदेव विरागसागर जी ने सन् 1992 में वर्षायोग किया था। उसके समापन अवसर पर उनके लिए आचार्य पद की घोषणा हुई उसके लिए दादा गुरु विमलसागर जी से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए जाने सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। पश्चात् आचार्य पद प्रतिष्ठा के अवसर पर ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और 18-12-93 को श्रेयांसगिरि क्षेत्र पर ऐलक दीक्षा होने के बाद मुनि दीक्षा पंच कल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर 8-11-96 को इसी सिद्ध क्षेत्र पर प्राप्त की।

लगभग 28 वर्ष बाद पुनः आने का अवसर प्राप्त हुआ तो देखा काफी विकास हुआ है। शांति, कुंथु, अरहनाथ का बृहद् जिनालय निर्माण हुआ। ग्रीष्मकालीन प्रवास के अवसर पर पूजन, चालीसा,आरती एवं वंदना इत्यादि की रचना का भाव हुआ। जिसका संकलन ब्र. आस्था दीदी ने किया एवं प्रकाशन भी किया जा रहा। इस कार्य में जिसका भी प्रत्यक्ष परोक्ष सहयोग है सभी को मेरा आशीर्वाद....

आचार्य विशदसागर झांसी 13-8-2024

परिचय के झरोखे में

यह पावन पुनीत धरा को सिद्धक्षेत्र के नाम से जाना जाता है। इसे लघु सम्मेदशिखर कहते हैं। प्रथम यहाँ पर त्रय पद धारी शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ की प्रतिमा के साथ त्रिकाल चौबीसी भी बनी हुई है। सामने मानस्तंभ के दर्शन भी अनुपम है। कहा जाता है यहाँ जिनालय क्र.3 में अतिशयकारी पारसनाथ भगवान अति प्राचीन प्रतिमा है यहाँ भक्त अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं।

इस धरा को सिद्धक्षेत्र घोषित करने वाली श्री गुरुदत्तादि की निर्वाण स्थली है। यह गुरुदत्त की गुफा के नाम से जाना जाता है। जहाँ गुरुदत्त स्वामी को उनके पूर्व जन्मों के बैरी द्वारा कपास आदि में लपेट कर गुफा के द्वार को बंद कर अग्नि को समर्पित कर दिया था। परंतु मुनिराज ने समता भाव के साथ उपसर्ग सहन करते हुए केवली पद प्राप्त किया और इस धरा को निर्वाण भूमि होने का गौरव प्राप्त हुआ। गुफा में गुरुदत्त स्वामी के चरण चिंह सुशोभित हैं। यहाँ रुककर थकान के साथ-साथ आत्म शांति की अनुभूति होती है।

पर्वतराज की वंदना करने में लगभग दो घंटे लग जाते हैं। यहाँ पर कुल 78 मंदिर है, चरण चिंह, मानस्तंभ, निर्वाण गुफा, त्रिकाल चौबीसी मंदिर, तीर्थंकर दीक्षा वन, संग्रहालय, उपसर्ग स्थली आदि के साथ-साथ तीर्थंकरों के चरण चिंह अंकित हैं। चौबीसी मंदिर, आश्रम मंदिर एवं तलहटी में धर्मशाला है। जहाँ प्रायः कर साधु संतों आ आगमन होता रहता है। इस मंदिर के मूलनायक भगवान श्री आदिनाथ स्वामी जी है। ये वही मंदिर जहाँ मुनि श्री विरागसागर जी महाराज का आचार्य पद प्रतिष्ठा 8 नबंवर 1992 में इस क्षेत्र पर संपन्न हुई थी। और उस समय पर ब्र. रमेश भैया ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण स्वीकार किया था। गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी मुनिराज ने 1996 में वर्षायोग संपन्न किया था और उसी समय पंचकल्याणक के अवसर पर ब्र. रमेश भैया वर्तमान में आचार्य विशदसागर जी महामुनिराज की मुनि दीक्षा हुई थी। जिन-जिन की इस क्षेत्र पर दीक्षा हुई वह कालांतर में श्रेष्ठ आचार्य बनकर धर्म प्रभावना कर रहे है। इस क्षेत्र की महिमा अपरंपार हैं।

ब्र. आस्था दीदी /संघस्थ

Created by Universal Document Converter

मंगलाष्टक

–आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधु रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धी को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादि चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, सप्त बुद्धि ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।

रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनग्रह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर ग्राम।
नेमिनाथ गिरनार सुगिरि से, महावीर पावापुर धाम।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर के माता–पिता यक्ष–यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव में, सुनते–पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।9।।

।। इति मंगलाष्टकम्।।

गुरु भक्ति

धर्म प्रभावक परम पूज्य हे !, तव चरणों में करूँ नमन्।
बुद्धि विकाशक प्रबल आपको, करते हम सादर वन्दन।।
परम शान्ति देने वाले हे !, गुरुवर करते हम अर्चन।
विशद सिन्धु गुण के आर्णव को, करते हम शत्–शत् वन्दन।।

Created by Universal Document Converter

प्रतिष्ठा विधि

हस्त शुद्धि

ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रच्छालनं करोमि स्वाहा।

"जल शुद्धि मंत्र"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

अमृत शुद्धि मंत्र-

ॐ ह्रीं: अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय-2 सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

(पीली सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना।)

पात्र शुद्धि

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धिं करोमि स्वाहा

दिग्बंधन

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं: ह्रूं: ह्रौं: ह्रः ऊर्ध्वलोक, अधोलोक, मध्यलोक समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र

ॐ नमोंऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते भवतु। यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगावें।

अंगन्यास विधि

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम गात्रे रक्ष रक्ष स्वााहा
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रं णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

मण्डप प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः नमोर्हते श्रीमते पवित्रर जलेन मण्डप शुद्धिं करोमि स्वाहा। (मण्डप पर जल से शुद्धि करें)
भो चतुर्णिकाय देवाः! स्वस्थाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोगं कुरु कुरु स्वाहा।
भो! पूर्वदिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने....
भो! दक्षिणदिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने..
भो! पश्चिमदिशा ..विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने.
भो! उत्तरदिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने...
भो! वातकुमार देवाः, अग्नि कुमार देवाः, वास्तुकुमार देवः, मेघकुमार देवाः, नागकुमार देवाः स्वस्थाने ...
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जिन मण्डप स्थले धरित्री जाग्रते अवस्थायां कुरु कुरु स्वाहा ।
भो क्षेत्रपाल देवः! स्वथाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोग कुरु कुरु स्वाहा ।
भो धनद! रत्न वृष्टिं करु कुरु स्वाहा।
रक्षा मन्त्र-ॐनमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

शांति मंत्र-ॐ क्षूं हूं फट् किरीटिं घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय, सहस्रखण्डान् कुरु, परमुद्रां छिन्द- छिन्द, परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द, क्षां क्षः फट् स्वाहा।

"पात्र शुद्धि मंत्र"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ऐतेषां पात्रशुद्धिं सर्वांगशुद्धिः भवतु।

"मण्डप शुद्धि मंत्र"

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप शुद्धिं कुर्मः।

"मण्डप पर सूत्र बाँधने का काव्य"

यत्पंचवर्णाक्त पवित्रसूत्रं, सूत्रोक्त तत्त्वाभ मनेकमेकम्।
तेनत्रिवारे परिवेष्टयामः, शिष्टेष्ट यागाश्रय मण्डपेन्द्र।।

मन्त्रः-ॐ अनादिपरब्रहम्णे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः । ॐचतुर्मंगलाय नमो नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ चतुः शरणायनमो नमः---अस्य विधान --- नामधेयं यजमानस्य श्री ---यजमानस्य सपरिवारे वर्धस्व-2 विजस्य -2 भवतु-2सर्वदा शिवं कुरु

यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र

ॐ नमः परमशान्ताय शांति कराय रत्नत्रय स्वरूप यज्ञोपवीतं धारयामि मम गात्र पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

कलश में सामग्री रखने का मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं पूंगी फलानि प्रभृति वस्तुनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

"मंगल कलश परश्री फल रखने का मंत्र"

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षैं क्षैं नमो अर्हते भगवते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री (विधान) महामण्डल विधान कार्ये। ...श्री वीर निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्धयर्थं, पात्रशुद्धयर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं ह्रवीं ह्रवीं हं सः स्वाहा।

दीपक स्थापना

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकंश, कललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापना

अरहंत-भासियत्थं गणहर-देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाण-महोवहिं सिरसा।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत रत्नत्रय स्वरूप जिन शास्त्र स्थापयामि स्वाहा।।।

सरस्वती वंदना

तर्ज- जहाँ डाल-डाल पे सोने.....।

माँ सरस्वती के सुमरन से, कटता अज्ञान अंधेरा।
है वंदन माँ को मेरा, है वंदन माँ को मेरा।।
हे माँ! हे माँ! हे माँ! ।।टेक।।
हिंदू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, जैन धर्म के धारी-2।
कृपा प्राप्त करते हैं माँ की, जग के सब नर-नारी-2।।
माँ की कृपा बरसती सब पे, ना कोई तेरा मेरा।।है वंदन---।।1।।
कृपा पात्र जो होते माँ के, वे ज्ञानी हो जाते-2।
सारे जग की महिमा पाते, वे होशियार कहाते-2।।
माँ की कृपा से कट जाता है, विशद कर्म का घेरा।
है वंदन माँ को मेरा, है वंदन मां को मेरा।। है वंदन--।।2।।
निज परिवार समाज देश के, नाम को रोशन करते-2।
शरणागत को सद् शिक्षा दे, उनके संकट हरते-2।।
है वंदन माँ को मेरा, है वंदन मां को मेरा।।है वंदन--।।3।।
हम सब बालक मात आपके, द्वारे पर नित आते-2।
विद्या का दो दान हे माता!, सादर शीश झुकाते-2।।
''विशद''भावना भाते माँ तव, हृदय में रहे बसेरा।
है वंदन माँ को मेरा, है वंदन माँ को मेरा।।है वंदन--।।4।।
माँ सरस्वती के सुमरन से, कटता अज्ञान अँधेरा-----।।

Created by Universal Document Converter

तर्ज- आलोचना पाठ (चाल छन्द)

परिणाम की शुद्धी हेतू, जिनबिम्ब परम है सेतू।
जिन के दर्शन को पाते, निज के दर्शन हो जाते।।
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे।
हम जिनाभिषेक को आए, जिनपद में शीश झुकाए।।1।।

(श्वोसोच्छवास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र जाप करें)

अभिषेक प्रतिज्ञा

जिन प्रतिमा के न्हवन का, करते हम संकल्प।
भाव सुमन अर्पण करें, छोड़ के अन्तर्जल्प।।2।।

ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

तिलक लगाने का मंत्र

चंदन खुशबूदार ले, तिलक करें नव अंग।
करें इन्द्र की कल्पना, धारें विशद उमंग।।

ॐ ह्रीं नवांगेषु तिलकं अवधारयामि।

श्रीकार लेखन

उभय लक्ष्मी प्राप्तजिन, तीर्थंकर भगवान।
पीठोपरि श्रीकार हम, लिखते महति महान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पीठोपरि श्रीकार लेखनं करोमि।

"सिंहासन स्थापना"

पाण्डु शिला की कल्पना, करते यहाँ विशेष।
न्हवन हेतु जिस पर यहाँ, तिष्ठो श्री जिनेश।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पीठथापनं (सिंहासन) स्थापनं करोमि।

"जिनबिम्ब स्थापना"

भक्तिभाव के रत्न जड़ित, पावन सिंहासन।
हृदय कमल मेरा हे प्रभु, भावों का आसन।।
आहवानन् है यहाँ आपका, सिंहासन पर।
नाथ! पधारो आप विशद, श्रद्धा आसन पर।।5।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाय भगवन्निह पाण्डुक-शिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

"चार कलश स्थापना"

प्रासुक निर्मल नीर से, कलश भराए चार।
स्थापित चउ कोंण में, करते मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं चतुःकोणेषु स्वस्तये चतुः कलशस्थापनं करोमि।

"अर्घ चढ़ावें"

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
करने को अभिषेक हम, अर्घ्य चढ़ाते नाथ!।।7।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थित जिनायर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

"जल से अभिषेक"

जिन की मुद्रा जिन बिम्बों में, विशद झलकती अपरम्पार।
भावों से जिनवर का दर्शन, करते हैं हम बारम्बार।।
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर-जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

"चार कलश से अभिषेक"

करते न्हवन चार कलशों से, कर्म घातिया मम क्षय हों।
अनन्त चतुष्टय पा जाऐं हे नाथ! आपकी जय जय हो।।
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादिमहावीरान्त- चतुर्विंशति तीर्थंकर-परम-देवं-आद्यानां आद्ये मध्यलोके, जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नाम्निनगरे.... तिथो....वासरे मुन्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं चतुः कलशेन जलेनाभिषिंचयामः।।

"वृहद जिनाभिषेक"

परमौदारिक परम सुगन्धित, प्रभु तन से शुभ अतिशय हो।
न्हवन सुगन्धित जल से करते, नाथ! आपकी जय-जय हो।।

Created by Universal Document Converter

करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो।।10।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं हां हीं हूं हें हैं हं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति **सुगन्धित जलेन** वृहच्छांति-मन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके 'विशद' पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शुद्ध वस्त्र से बिम्ब का, करते हम प्रक्षाल।
यही भावना है विशद, कटे कर्म जंजाल।।12।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

आसन पर जिनराज को, करें विशद आसीन।
विनयभाव आदर सहित, सब मिल ज्ञान प्रवीण।।13।।

ॐ ह्रीं अभिषेकोपरान्ते सिंहासने जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

नीर गंध आदिक सभी, द्रव्यों का ले अर्घ्य।
जिन चरणों अर्पित करें, पाने सुपद अनर्घ्य।।14।।

ॐ ह्रीं पीठ स्थित जिनायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- पूज रहे तव पाद हम, तारण-तरण जहाज।
भव-भव भ्रमण विनाशकर, पाएँ सिद्ध समाज।।15।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

अभिषेक समय की स्तुति

(तर्ज-करले जिनवर का गुणगान आई मंगल घड़ी...)

करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।
आई सारी नगरी, झूमे जनता सगरी।।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।1।।
प्रासुक करके जल भर लाए, सिर के ऊपर ढारे।
करते हम अभिषेक प्रभु का, जागे भाग्य हमारे।।

सिर पर रखकर लाए भक्त, देखो जल गगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।2।।
पाण्डुक शिला पे जिन प्रतिमा को, भाव सहित पधराए।
चार कलश चारों कोंणों पर, जल भरकर रखवाए।।
खुशियाँ छाईं चारों ओर, हमारी नगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।3।।

भजन-अभिषेक समय का

(तर्ज-खिलौना जानकर)

कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।
बनें हम मोक्ष के राही, न्वहन प्रभु का कराते हैं।।टेक।।
कभी अरहंत के कोई, चरण भी छू नहीं पाते।
बिम्ब पाषाण धातू के, प्रतिष्ठित भव्य करवाते।।
पुण्य की वृद्धि करने को, न्वहन उनका कराते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।।1।।
जिनालय तीन लोकों में, अकृत्रिम श्रेष्ठ शुभकारी।
रहे जिनबिम्ब उनमें शुभ, श्रेष्ठ शाश्वत हैं अविकारी।।
वहाँ नर देव विद्याधर, न्वहन कर सिर झुकाते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।।2।।
प्रथम कर्त्तव्य श्रावक का, रहा अभिषेक फिर पूजन।
करें जो भाव से अर्चा, पुण्य का वे करे अर्जन।।
भक्ति से इन्द्र सौ प्रभु का, न्वहन अतिशय कराते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।।3।।
प्रभु यह भक्त अर्चा को, यहाँ पर आज आये हैं।
'विशद' अभिषेक कर प्रभु का हर्ष मन में जगाते हैं।।
बनें हम मोक्ष के राही, भावना आज भाते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।।4।।

Created by Universal Document Converter

अभिषेक समय की वन्दना

(तर्ज–जिनवर जगती के ईश....)

हे तीन लोक के नाथ! झुकाते माथ।
आज हम स्वामी, अभिषेक करें शिवगामी।।टेक।।
अकृत्रिम सोहें जिन मंदिर, जिन प्रतिमाएँ जिनमें सुंदर।
भक्ती करके शत इन्द्र करें प्रणमामी, अभिषेक करें शिवगामी।।1।।
जल क्षीर सिंधु से लाते हैं जिनवर का न्हवन कराते हैं।
भक्ति कर बनते भक्त, श्रेष्ठ पथगामी, अभिषेक करे शिवगामी।।2।।
सुर इन्द्रों का सहयोग करें, इन्द्राणी मंगल पात्र भरें।
सुर चँवर ढौरते, जिनके आगे नामी, अभिषेक करे शिवगामी।।3।।
जो न्हवन प्रभु का करते हैं, वे कर्म कालिमा हरते हैं।
वे सद्श्रावक भी बने 'विशद' शिवगामी, अभिषेक करें शिवगामी।।4।।
जो जिनवर का अभिषेक करें, वे अपने संकट दूर करें।
सद् संयम धर, बन जाते अन्तर्यामी, अभिषेक करें शिवगामी।।5।।
हे तीन लोक.....।।

अभिषेक समय का भजन

तर्ज- अमृत से गगरी भरो------

कलशों में नीर भरें, कि प्रभु जी का न्हवन कराएँ।
न्हवन कराएँ प्रभु, न्हवन कराएँ।।
कलशों में नीर भरें, कि प्रभुजी का न्हवन कराएँ।।टेक।।
क्षीरोदधि से जल भर लाएँ, श्री जिन का अभिषेक कराएँ।
हँसी खुशी बढते चलें, कि प्रभु जी का न्हवन कराएँ।।1।।
मनहर पाण्डुक शिला धराएँ, जिस पर श्री जिन को पधराएँ।
सिर पर त्रय धारा करें, कि प्रभु जी का न्हवन कराएँ।।2।।
चार कलश से न्हवन कराएँ, मंत्रोच्चार कर प्रभु गुण गाएँ।
हृदय में श्रद्धा धरें, कि प्रभु जी का न्हवन कराएँ।।3।।
प्रभु के चरणों शीश झुकाएँ, पावन जय-जयकार लगाएँ।
प्रभु जी के पायन परें, कि प्रभु जी का न्हवन कराएँ।।4।।
धन्य-धन्य हैं भाग्य हमारे, कलश प्रभु जी के सिर पे ढारें।
'विशद' हृदय हर्षे, कि प्रभु जी का न्हवन कराएँ।।5।।

श्री शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

वीतराग जगन् नेत्रं, सर्वज्ञं सर्व दर्शकम्।
विशद शांति प्रदायं, शांति धारा करोम्यहम्।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकलमषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगो-पसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव- विनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम (.....) **सर्वज्ञानावरण कर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वदर्शनावरण कर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववेदनीयकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमोहनीयकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वायुःकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वनामकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वगोत्रकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वान्तरायकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वक्रोधं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमानं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमायां** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वलोभं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमोहं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वरागं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वद्वेषं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वगजभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वसिंहभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वअश्वभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वगौभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वाग्निभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वसर्पभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वयुद्धभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वसागरनदीजलभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वनिगडादिबंधनभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वविषाक्त**

Created by Universal Document Converter

वाष्प क्षरण भयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूकम्पदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि, **सर्वभूतपिशाचव्यंतर- डाकिनीशाकिन्यादि भयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वधनहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वव्यापारहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वराजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचौरभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुष्टभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशत्रुभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशोकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववैरं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भिक्षं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमनोव्याधिं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वआर्तरौद्रध्यानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भाग्यं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायशः** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वपापं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्व अविद्यां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वप्रत्यवायं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वकुमतिं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रूरग्रहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुःखं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वापमृत्युं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखारशेखार-शिखामणि-त्रिभुवन-गुरुत्रिभुवनजनताअभयदानदायक-सार्वभौमधर्म-साम्राज्य-नायकमहतिमहावीरसन्मति-वीरातिवीर-वर्धमाननामालंकृत श्रीमहावीर जिनशासन-प्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु-3।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे..... प्रदेशे..... नामनगरे वीरसंवत्..... तमे..... मासे. ..... पक्षे..... तिथौ..... वासरे नित्य पूजावसरे (..... विधानावसरे) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्य मम च... शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री शांतिजिनेश्वर! **सुभिक्षं** कुरू कुरू **मनः समाधिं** कुरू कुरू **धर्म शुक्लध्यानं** कुरू कुरू **सुयशः** कुरू कुरू **सौभाग्यं** कुरू कुरू **अभिमतं** कुरू कुरू **पुण्यं** कुरू

कुरू **विद्यां** कुरू कुरू **आरोग्यं** कुरू कुरू **श्रेयः** कुरू कुरू **सौहार्दं** कुरू कुरू **सर्वारिष्ट ग्रहादीन्** अनुकूलय अनुकूलय **कदलीघातमरणं** घातय घातय **आयु** द्राघय द्राघय। **सौख्यं** साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव-शांति कुरू कुरू ह्रीं नमः।

परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्थय मम च..... सर्वशांतिं कुरू कुरू तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं कुरू कुरू वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभाव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शांती धारा देते हैं।।
अर्घ-जल गंधाक्षत पुष्पचरु फल, दीप धूप का अर्घ्य बनाय।
'विशद'भाव से शांति धार दे, श्री जिनपद में दिया चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुरु श्री का अर्घ्य

दोहा- राही मुक्ती मार्ग के, पालें पञ्चाचार।
परमेष्ठी आचार्य पद, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रूँ परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज-आनन्द अपार है)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।।टेक।।
दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।1।।
जिनवर...
मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं।।2।।
जिनवर...
शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।3।।
जिनवर.
हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।।4।।
जिनवर...
नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, दर शीश झुकाते हैं।।5।।
जिनवर का....!

गन्धोदक लेने का मंत्र

दोहा- मानो जिन गिर से गिरी, जल धारा हे नाथ!
गंधोदक उत्तमांग उर, 'विशद' लगाएँ माथ।।

मस्तकोपरि गंधोदक धारयामि

लघु विनय पाठ

दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह ,पढें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव जी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनंत चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीडाहारी लोक में ,भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के,शिव पद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भव सिंधु में, एक आप आधार।
कर्म बंध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना ,से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिंब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

Created by Universal Document Converter

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाऽशुद्ध अवस्था में कोई ,णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाये।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

(यदि अवकाश हो तो यहाँ पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले ,पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा
ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग,करणानुयोग,चरणानुयोग,द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र दशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी ,अनंत चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन , का करने वाले कल्याण।।
तीनलोक के ज्ञाता दृष्टा ,जग मंगल कारी भगवान।
भावशुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक ,श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!।
हे अर्हंत! अष्ट द्रव्यों का ,पाया मैंने आलंबन।
होकर के एकाग्र चित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन,सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शान्ती जिन,कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके ,हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान्।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निष्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व-पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौ भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान्।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मनबल वचन कायबल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धी के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

Created by Universal Document Converter

लघु मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना

दोहा

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमाकृत्रिम बिंब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलहकारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत, विद्यमान विंशति जिन,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्रनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थ क्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड गणधरादि मुनि, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सखी छंद

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..... जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..... अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..... कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों मय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..... अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..... मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री..... अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सिम करो, कर दो यह उपकार।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **जैनधर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।**
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

ज्ञानोदय छंद

Created by Universal Document Converter

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यंतर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान्।।3।।
मध्यलोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि पे, नंदीश्वर हैं मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुंडल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान्।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा

सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहे हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित वर्तमान,भूत,भविष्यत,संबंधी पंच भरत, पंच ऐरावत, विद्यमान विंशति जिन,सर्व देव,शास्त्र,गुरु,नवदेवता,तीस चौबीसी,पंचमेरु, नंदीश्वर,त्रिलोक संबंधी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्रनाम, सोलहकारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार,तीर्थक्षेत्र,अतिशय क्षेत्र, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड गणधरादि जयमाला अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री आदिनाथ पूजन

(स्थापना)

जो कर्म भूमि के समय श्रेष्ठ, षट्कर्मों का उपदेश किए।
तुम ऋषी बनो या कृषी करो, जीवों को यह संदेश दिए।।
ऐसे श्री ऋषभ देव स्वामी, जो धर्म प्रवर्तक कहलाए।
हम आदिनाथ का आह्वानन, करने को चरणों में आए।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आहवाननं। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय से पूजा रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा जो करें, पावें शांती अपार।
शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार।।

।। शान्तेय-शान्तिधारा ।।

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते विशद, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जाते निर्मूल।।

।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(मोतियादाम छन्द)

आषाढ़ वदि द्वितीया रही महान, प्रभु जी पाए गर्भ कल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़वदि द्वितीयायां गर्भकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र वदि नौमी को भगवान, प्राप्त शुभ किए जन्मकल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र वदि नौमी को शुभकार, प्रभु ने संयम लीन्हा धार।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी फाल्गुन एकादशी जान, प्रभु जी पाए केवलज्ञान।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनवदि एकादश्यां केवलज्ञानकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदि चौदश हुई महान, कैलाशगिरि से पाए निर्वाण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।5।।

ॐ ह्रीं माघवदि चतुर्दश्यां मोक्षकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(चौबोला छन्द)

आदिनाथ तीर्थंकर स्वामी, धर्म प्रवर्तन किए महान।
निज स्वभाव में लीन हुए प्रभु, पाए शास्वत मुक्ती धाम।।
जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, नगर अयोध्या महति महान।
चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, पाए प्रभू गर्भ कल्याण।।1।।
पाण्डु शिला पे हर्ष भाव से, इन्द्र किए प्रभु का अभिषेक।।
नाम दिया सौधर्म इन्द्र ने, प्रभु के पग में लक्षण देख।।
षट् कर्मों का राज्य अवस्था, में ही दिए आप संदेश।
नृत्य देखकर नीलाञ्जना का, संयम धारे प्रभु विशेष।।2।।
सिद्धारथ वन में जा प्रभु ने, निज आतम का किया मनन।
एक हजार वर्ष तप करके, शुक्ल ध्यान में हुए मगन।।
कर्म घातियाँ नाश प्रभु ने, पाया पावन केवलज्ञान।
इन्द्राज्ञा पा धन कुबेर ने, समवशरण कीन्हा निर्माण।।3।।
गंध कुटी में कमलाशन पर, अधर विराजे जिन तीर्थेश।
ॐकारमय दिव्य देशना, द्वारा दिए भव्य संदेश।।
अष्टापद पर जाके प्रभु जी, किए कर्म का पूर्ण विनाश।
मोक्ष महापद को पाकर के, सिद्धशिला पर कीन्हे वास।।4।।
किए प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाएँ, नगर नगर में आभावान।
विशद भाव से जिनके चरणों, करते हैं हम भी गुणगान।।
नाथ आपकी अर्चा करके, मेरे मन जागा आनन्द।
पुण्योदय जागा है मेरा, हुआ पाप आश्रव भी मंद।।5।।

(घत्ता छंद)

हे आदीश्वर! प्रथम जिनेश्वर, भव संताप विनाश करो।
हम तुमको ध्याते पूज रचाते, मेरे उर में वास करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक में पूज्य है, आदिनाथ दरबार।
जिनकी अर्चा से मिले, मोक्ष महल का द्वार।।

इत्याशीर्वादः

Created by Universal Document Converter

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना

शनि ग्रह पीड़ा हर कहे, मुनिसुव्रत भगवान।
जिनका करते आज हम, भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई छन्द)

निर्मल नीर भराकर लाए, जन्मादिक रुज मम नश जाए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर से शुभ गंध बनाए, भवाताप हरने हम आए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत चढ़ा रहे मनहारी, अक्षय पद दायक शुभकारी।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाते भाई, क्षुधा रोग नाशी शिवदाई।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के हम शुभ दीप जलाएँ, मोह तिमिर से मुक्त पाएँ।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में हम धूप जलाएँ, आठों कर्म नाश हो जायें।।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यह सरस चढ़ाते भाई, जो हैं मोक्ष महाफलदायी।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तायं फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सावन वदि द्वितिया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभु जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि दशमी शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिवपद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

जयमाला

दोहा- मुनिसुव्रत भगवान की, रही निराली चाल।
भव सुख पाते जीव जो, गाते हैं जयमाल।।

(नरेन्द्र छंद)

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।
राजगृही में खुशियाँ छाईं, जग जन सब हर्षाए।।1।।
नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई।
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाये थे भाई।।2।।
तीन लोक में खुशियाँ छाईं, घड़ी जन्म की आई।
सहस्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई।।3।।
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिह्न बताया।
बीस हजार वर्ष की आयू, श्याम रंग शुभ गाया।।4।।
उल्कापात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए।।5।।
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी।।6।।
गिरि सम्मेद शिखर के ऊपर, निर्जर कूट बताई।
उस पावन भूमी से प्रभु ने, मोक्ष लक्ष्मी पाई।।7।।

दोहा- अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।
कूट निर्जरा से प्रभु, नाशे कर्म अशेष।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मुनिसुव्रत भगवान का, जपें निरन्तर नाम।
इस भव के सुख प्राप्त कर, पावें वे शिवधाम।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।।

श्री द्रोणगिरि पूजन

स्थापना

साढ़े आठ कोटि मुनिवर जी, गुरु दत्तादिक हुए महान।
लघु सम्मेद शिखर द्रोणागिरि, से पद पाए हैं निर्वाण।।
किए साधना इसी भूमि पर, अपने कर्म किए जो क्षय।
आह्वानन् करते हम जिनका, अनुपम पद पाने अक्षय।।
दोहा- आओ पधारो मम हृदय, करो मेरा कल्याण।
जब तक मुक्ती न मिले, करें आपका ध्यान।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

ताटंक छंद

हम काल अनादी से जग में, कर्मों के नाथ! सताए हैं।
तुम सम निर्मलता पाने को, यह प्रासुक जल हम लाए हैं।।
लघु सम्मेद शिखर शुभ पावन, द्रोणागिरि सिद्धों का धाम।
मोक्ष महापद हम भी पाएँ, हाथ जोड़ कर करें प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय के विषय भोग सारे, हमने भव-भव में पाए हैं।
हम स्वयं भोग हो गए मगर, न भोग पूर्ण कर पाए हैं।।
लघु सम्मेद शिखर शुभ पावन, द्रोणागिरि सिद्धों का धाम।
मोक्ष महापद हम भी पाएँ, हाथ जोड़ कर करें प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो संसारताप विशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

निर्मल अनंत अक्षय अखंड, अविनाशी पद प्रभु पाए हैं।
स्वाधीन सफल अविचल अनुपम, पद पाने अक्षय लाए है।।
लघु सम्मेद शिखर शुभ पावन, द्रोणागिरि सिद्धों का धाम।
मोक्ष महापद हम भी पाएँ, हाथ जोड़ कर करें प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जग में बलशाली प्रबल काम, उस काम को आप हराए हैं।
प्रमुदित मन विकसित पुष्प प्रभु, चरणों में लेकर आए हैं।।
लघु सम्मेद शिखर शुभ पावन, द्रोणागिरि सिद्धों का धाम।
मोक्ष महापद हम भी पाएँ, हाथ जोड़ कर करें प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय विषयों की लालच से, चारों गति में भटकाए हैं।
यह क्षुधा रोग न मैट सके, अब क्षुधा मिटाने आए हैं।।
लघु सम्मेद शिखर शुभ पावन, द्रोणागिरि सिद्धों का धाम।
मोक्ष महापद हम भी पाएँ, हाथ जोड़ कर करें प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेघं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मोह महा मिथ्या कलंक, आदिक सब दोष नशाए हैं।
त्रिभुवन दर्शायक ज्ञान विशद, प्रभु अविनाशी पद पाए हैं।।
लघु सम्मेद शिखर शुभ पावन, द्रोणागिरि सिद्धों का धाम।
मोक्ष महापद हम भी पाएँ, हाथ जोड़ कर करें प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है कर्म जगत में महाबली, उसको भी आप हराए हैं।
गुप्ती आदिक तप करके क्षय, कर्मों का करने आए हैं।।

लघु सम्मेद शिखर शुभ पावन, द्रोणागिरि सिद्धों का धाम।
_mj _hmX h_ ^r nmE± hmW Om{ कर करें प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से अति भिन्न अलौकिक फल, निर्वाण महाफल पाये हैं।
हम आकुल व्याकुलता तजने, यह श्रीफल लेकर आये हैं।।
लघु सम्मेद शिखर शुभ पावन, द्रोणागिरि सिद्धों का धाम।
मोक्ष महापद हम भी पाएँ, हाथ जोड़ कर करें प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बनाए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।
लघु सम्मेद शिखर शुभ पावन, द्रोणागिरि सिद्धों का धाम।
मोक्ष महापद हम भी पाएँ, हाथ जोड़ कर करें प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा दे रहे, हे करुणा के नाथ!।
हमको भी अब ले चलो, मोक्ष महल में साथ।।

शांतये शांतिधारा

दोहा- भक्त भाव भक्ती करें, चरण शरण में आन।
इच्छा पूरण हो सभी, तीर्थंकर भगवान।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- पूजें ध्यायें भाव से, वंदन करें त्रिकाल।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि, की गाते जयमाल।।

ज्ञानोदय छंद

Created by Universal Document Converter

बना तलहटी में जिन मंदिर, आदिनाथ सोहें तीर्थेश।
शांतिनाथ मुनिसुव्रत स्वामी, चौबीसी भी रही विशेष।।
तीर्थ वंदना करने हेतू, पर्वत पर चढ़ जाते हैं।
गाते हैं कई भजनावलियाँ, जय-जयकार लगाते हैं।।1।।
प्रथम जिनालय में सुपार्श्व जिन, के पावन दर्शन पाएँ।
द्वितिय मंदिर में चन्द्रप्रभ, चौबीसी पद सिर नाएँ।।
पार्श्वनाथ तृतिय मंदिर में, चौथे में श्री आदि जिनेश।
बाहुबली की प्रतिमा आगे, गुरुदत्त जिन रहे विशेष।।2।।
अजितनाथ जी इसी जिनालय, में शोभा पाएँ अभिराम।
ऋषभनाथ जी छठे जिनालय,को बतलाया अतिशय धाम।।
सप्तम जिनगृह में चन्द्रप्रभ, पार्श्व सुपारस आदि जिनेश।
अष्टम जिनगृह में चन्द्रप्रभ, के पद पूजें भक्त विशेष।।3।।

विष्णु पद छंद

नौवें मंदिर में चन्द्रप्रभ, की प्रतिमा सोहे।
छोटी मड़िया में शीतल जिन,सबका मन मोहें।।
लाल जिनालय विमल सिंधु के, चरणों का जानो।
और रसोइन की मड़िया में, पार्श्व प्रभू मानो।।4।।
गुरुदत्त निर्वाण गुफा से, शिव पदवी पाए।
पास रहे संग्रहालय में जिन, बिंब गई गाए।।
पार्श्वनाथ श्री नेमिनाथ के, दर्शन फिर होते।
गंधकुटी में चन्द्रप्रभ जी, सब कालुष खोते।।5।।
मानस्तंभ चतुर्दिश दर्शन, पा मन हर्षाए।
श्री श्रेयांस जिनालय पीछे, महिमा दिखलाए।।
अरहनाथ के दर्शन क्रमशः, पार्श्वनाथ स्वामी।
आदिनाथ प्राचीन जिनालय, में अंतर्यामी।।6।।

पार्श्वनाथ जिनराज जिनालय, सास बहू वाला।
आदिनाथ के दर्शन सबको, है देने वाला।।
आदिनाथ का रहा जिनालय, आगे भी भाई।
पंच बालयति जिनके दर्शन, होते सुखदाई।।7।।
आदिनाथ जिन पार्श्वनाथ जी, पद्म प्रभू स्वामी।
शांति कुंथु जिन अरह जिनालय, है विशाल नामी।।
तीन काल के चौबिस जिन हैं, शिखर में जिन गाए।
स्वर्णभद्र शुभ कूट जिनालय, जो शुभ कहलाए।।8।।
मानस्तंभ के दर्श चतुर्दिक, आगे शुभ मिलते।
श्री गुरुदत्त के दर्शन करके, हृदय कमल खिलते।।
क्रमशः मंदिर नेमिनाथ का, पार्श्वनाथ गाए।
पार्श्वनाथ फिर महावीर जिन, चन्द्रप्रभ पाए।।9।।
नेमिनाथ जिन पार्श्वनाथ त्रय, खड्गासन गाए।
चन्द्रप्रभु के दर्शन करके, सेंधपा में आएँ।।
उदासीन आश्रम में पारस, श्री जिन को ध्याएँ।
आदिनाथ चौबीसी आगे, मानस्तंभ पाएँ।।10।।

दोहा- तीर्थ वंदना कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः क्षेत्र की वंदना, कीजे बारंबार।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि जिनालय स्थित सर्व जिनबिंब,निर्वाण पद प्राप्त गुरुदत्तादि आठ साढ़े करोड़ मुनिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आए यहाँ पर आज हम, भक्ति भाव के साथ।
सुख शांती सौभाग्य हो, चरण झुकाते माथ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप- ॐ ह्रीं श्री गुरुदत्त जिनेन्द्राय नमः।

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः।

Created by Universal Document Converter

श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर पूजन

स्थापना

भूतकाल अरु वर्तमान के, अरु भविष्य के जिन चौबीस।
पञ्च विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान होते हैं बीस।।
मन-वच-तन से भाव पुष्प ले, करते हैं सम्यक् अर्चन।
अपने उर के सिंहासन पर, करते हैं हम आह्वानन्।।
हे नाथ ! पधारो आकर के, न हमको प्रभु निराश करो।
हम भक्त रहेंगे सदियों तक, प्रभु मेरा भी विश्वास करो।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकारी भरतैरावत विदेहस्य अतीत अनागत वर्तमान तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

ज्ञानोदय छंद

इन्द्रिय के विषयों में फँसकर, हम जग भोगों में अटके हैं।
पाकर के जन्म-जरा-मृत्यु, प्रभु तीन लोक में भटके हैं।।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम नीर चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, नहिं शांति जरा भी मिल पाई।
मन आकुल व्याकुल रहा सदा, निज आतम की सुधि बिसराई।।
यह शीतल चंदन घिस करके, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुखमय अथाह भवसागर में, सदियों से गोते खाए हैं।
अक्षय अनंत पद बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।।
यह अक्षय अक्षत धोकर के, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

दिन-रात वासना में रत रहकर, अपने मन में सुख माना।
पुरुषत्व गँवाया है अपना, निज का पुरुषार्थ नहीं जाना।।
हम कामवासना नाश हेतु ,यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुभोजन खाकर के हमने, भव-भव में भूख मिटाई है।
न तृष्णा नागिन शांत हुई, हर चीज बनाकर खाई है।।
हम क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य बनाकर लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार तिमिर के नाश हेतु, दीपक से कीन्हा उजियाला।
उससे भी काम न चल पाया, है मोह तिमिर अतिशय काला।।
हो नाश मोह का अंध पूर्ण, हम दीप जलाकर लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

कर्मों की ज्वाला में जलकर, हमने संसार बढ़ाया है।
दलदल में फँसते गये अधिक, नहिं छुटकारा मिल पाया है।।
यह कर्म जलाने हेतु नाथ!, हम धूप जलाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों को अमृत फल माना, बस भोग-भोग का योग रहा।
भोगों के संग्रह में हमने, जीवन भर भारी कष्ट सहा।।
हम मोक्ष प्राप्ति के हेतु नाथ!, फल श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु चरणों शीश झुकाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग का सारा वैभव भी, न हमको सुखी बना पाया।
वैभव में जीवन गवाँ दिया, फिर अंत समय में पछताया।।
हम पद अनर्घ के हेतु नाथ!, यह अर्घ्य चढ़ाने लाये हैं।
अब भवसागर से पार करो, प्रभु! चरणों शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धी सर्व त्रिकाल तीर्थंकर समूहेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर त्रय काल के, विद्यमान जिन बीस।
गाते हैं जयमालिका, चरण झुकाकर शीश।।

(शंभु छंद)

तीनकाल त्रय चौबीसी के, रहे बहत्तर जिन तीर्थेश।
ध्यानमयी मुद्रा है पावन, जिनका रहा दिगम्बर भेष।।
पञ्च विदेहों में तीर्थंकर, विद्यमान होते हैं बीस।
उनके चरण कमल की भक्ती, में रत रहते सुर-नर ईश।।1।।

हमने काल अनादि गँवाया, विषय कषायों में फँसकर।
राग-द्वेष अरु मोह में जीवन, बीता मेरा रच-पचकर।।
चतुर्गती में भ्रमण किया है, कष्ट अनंतानंत सहे।
सम्यक्धर्म कभी न भाया, कर्म कुपंथ अनंत गहे।।2।।
आज पुण्य का योग मिला जो, शरण आपकी हम आए।
वीतराग निर्ग्रंथ दिगम्बर, मुद्रा के दर्शन पाए।।
हे प्रभु ! मेरी मति सुमति हो, सम्यक् पथ को ग्रहण करूँ।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण जिन, धर्म हृदय से वरण करूँ।।3।।
रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, उसमें ही अवगाहन हो।
निज स्वभाव में रमण होय मम्, यह जीवन मनभावन हो।।
प्रभु आपकी वाणी सुनकर, मोक्षमार्ग का ज्ञान हुआ।
अतिशय अनुपम और अलौकिक, निज स्वरूप का भान हुआ।।4।।
हे जिनवर ! आशीष दीजिए, निज स्वरूप में रमण करूँ।
छोड़ के सारे कुपथ पंथ को, मोक्षमार्ग पर गमन करूँ।।
कुछ भी चाह नहीं है मेरी, न ही अंतर में कुछ आश।
अंतिम है यह आश हमारी, मोक्ष महल में हो मम् वास।।5।।
हे ज्ञानेश्वर ! है तुम्हें नमन्!, हे विमलेश्वर! है तुम्हें नमन्!।
हे विशद ज्ञान के ईश नमन्!, हे तीर्थंकर! जिन तुम्हें नमन्!।।

ॐ ह्रीं त्रिकाल सम्बन्धी द्विसप्तति तीर्थंकरेभ्यो शाश्वत विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्योः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थंकर जिनतीर्थ हैं, श्रीधर श्री के नाथ।
अर्हत् घाती कर्म क्षय, विशद झुकाऊँ माथ।।

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

Created by Universal Document Converter

त्रिकाल चौबीसी के अर्घ्य

भूतकाल के प्रथम जिनेश्वर, श्री निर्वाण देव शुभ नाम।
वर्तमान के तीर्थंकर जिन, आदिनाथ के चरण प्रणाम।।
महापद्म भावी तीर्थंकर, के पद वन्दन करूँ त्रिकाल।
मैं त्रिकाल तीर्थंकर जिनको, अर्घ्य चढ़ाऊँ योग सम्हाल।।1।।

ॐ ह्रीं श्री निर्वाण ऋषभ महापद्म तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय तीर्थंकर सागरजिन, भूतकाल में हुए महान्।
वर्तमान के अजितनाथ जिन, के पद वंदूँ मैं धर ध्यान।।
भावी जिन का जैनागम में, श्री सूरप्रभ आता है नाम।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, करता बारम्बार प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सागर अजित सूरप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासाधु जिन भूतकाल के, तृतिय तीर्थंकर जानो।
वर्तमान के संभव जिनवर, अश्व चिह्न युत पहिचानो।।
सुप्रभ जिन भावी तीर्थंकर, भवि जीवों से पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महासाधु संभव सुप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलप्रभ भूतकाल के, हैं चतुर्थ तीर्थंकर देव।
अभिनन्दनजी वर्तमान के, तिनको वंदूँ यहाँ सदैव।।
स्वयंप्रभ हैं भावी तीर्थंकर, भवि जीवों से पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विमल अभिनन्दन स्वयंप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शुद्धाभ जिनेश्वर पञ्चम, भूतकाल के रहे महान्।
सुमतिनाथजी वर्तमान के, चकवा है जिनकी पहिचान।।

सर्वायुध भावी तीर्थंकर, भवि जीवों से पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धाभ सुमति सर्वायुध तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीधर तीर्थंकर षष्ठम हैं, भूतकाल के श्रेष्ठ महान्।
पद्मप्रभु हैं वर्तमान के, पद्म चिह्न जिनकी पहिचान।।
श्री जयदेव जिनेश्वर भावी, भवि जीवों से पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।6।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीधर पद्मप्रभु जयदेव तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम हैं तीर्थेश भूत के, श्रीदत्त है जिनका नाम।
श्री सुपार्श्वजिन वर्तमान के, जिन चरणों में विशद प्रणाम।।
कहे उदयप्रभ भावी जिनवर, तीन लोक में पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।7।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीदत्त सुपार्श्व उदयप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्धाभ जिनेश्वर अष्टम, भूतकाल में हुये हैं सिद्ध।
वर्तमान के चन्द्रप्रभुजी, सर्वलोक में रहे प्रसिद्ध।।
प्रभादेव जिन भावी जिनवर, भवि जीवों से पूज्य त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धाभ चन्द्रप्रभु प्रभादेव तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम जिनेश्वर भूतकाल के, श्री अमलप्रभ जिनका नाम।
वर्तमान के पुष्पदन्त जिन, के पद बारम्बार प्रणाम।।
श्री उदङ्क भावी तीर्थंकर, जिनको वंदन करूँ त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अमलप्रभ पुष्पदन्त उदङ्क तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

भूतकाल के दशवें जिनवर, श्री उद्धारजी रहे महान्।
वर्तमान के शीतल जिन का, भाव सहित करता गुणगान।।
प्रश्नकीर्तिजी भावी जिन हैं, जिनको वंदन करूँ त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।10।।

ॐ ह्रीं श्री उद्धार शीतल प्रश्नकीर्ति तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतकाल के तीर्थंकर जिन, अग्निदेव है जिनका नाम।
वर्तमान के ग्यारहवें जिन, श्री श्रेयांस को करूँ प्रणाम।।
जयकीर्ति तीर्थंकर भावी, जिनको वंदन करूँ त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।11।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निदेव श्रेयांस जयकीर्ति तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम तीर्थंकर बारहवें, भूतकाल के रहे महान्।
वासुपूज्य जिन वर्तमान के, भैंसा चिह्न रही पहिचान।।
पूर्णबुद्धि भावी जिनवर हैं, जिनको वंदन करूँ त्रिकाल।
पूजा करता भक्ति भाव से, श्री जिनेन्द्र पद योग सम्हाल।।12।।

ॐ ह्रीं श्री संयम वासुपूज्य पूर्णबुद्धि तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छंद)

श्री शिव तीर्थंकर तेरहवें, भूतकाल के आप कहाए।
विमलनाथजी वर्तमान के, तीर्थंकर पदवी को पाए।।
निष्कषाय जी भावी जिनवर, का वंदन करने हम आए।
जिनवर तीन काल के पावन, जिन पद में हम शीश झुकाए।।13।।

ॐ ह्रीं श्री शिव विमलनाथ निष्कषाय तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पाञ्जलि जिन भूतकाल के, चौदहवें तीर्थेश कहाए।
अनन्तनाथ जी वर्तमान के, तीर्थंकर की पदवी पाए।।

श्री विमलप्रभ भावी जिनवर, का वंदन करने हम आए।
जिनवर तीन काल के पावन, जिन पद में हम शीश झुकाए।।14।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पांजलि अनन्त विमलप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर उत्साह भूत के, आगम में पन्द्रहवें गाये।
वर्तमान के धर्मनाथ जिन, तीर्थंकर की पदवी पाये।।
श्री बहुलप्रभ भावी जिनवर, का वंदन करने हम आए।
जिनवर तीन काल के पावन, जिन पद में हम शीश झुकाए।।15।।

ॐ ह्रीं श्री उत्साह धर्मनाथ बहुलप्रभ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेश्वर जिनवर सोलहवें, भूतकाल के जानो भाई।
शांतिनाथ प्रभु की तीनों ही, लोकों में फैली प्रभुताई।।
श्री निर्मल भावी तीर्थंकर, का वंदन करने हम आए।
जिनवर तीन काल के पावन, जिन पद में हम शीश झुकाए।।16।।

ॐ ह्रीं श्री परमेश्वर शांतिनाथ निर्मल तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

भूतकाल के सत्रहवें जिन, ज्ञानेश्वर अतिशयकारी।
वर्तमान के कुन्थुनाथजी, जिनवर हैं त्रय पद धारी।।
चित्रगुप्तजी भावी जिनवर, को हम शीश झुकाते हैं।
सुर नरेन्द्र सौधर्म इन्द्र सब, चरण शरण को पाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानेश्वर कुन्थुनाथ चित्रगुप्त तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अठारहवें अतीत के, विमलेश्वर विस्मयकारी।
अरहनाथ जिन वर्तमान के, त्रय पद पाये सुखकारी।।
प्रभु समाधीगुप्त हैं भावी, तीर्थंकर मंगलकारी।
चरण वंदना करते हैं हम, श्री जिनेन्द्र हैं उपकारी।।18।।

ॐ ह्रीं श्री विमलेश्वर अरहनाथ समाधिगुप्त तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

श्री यशोधर भूतकाल के, जिन उन्नीसवें कहलाए।
मल्लिनाथ जिन वर्तमान के, तीर्थंकर पदवी पाए।।
भावी जिनवर कहे स्वयंभू, भाव सहित करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।19।।

ॐ ह्रीं श्री यशोधर मल्लिनाथ स्वयंभू तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णमति जिन कहे बीसवें, भूतकाल के मंगलकार।
मुनिसुव्रत जिन वर्तमान के, उनकी हम करते जयकार।।
भावी जिन कन्दर्प प्रभु का, भाव सहित करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।20।।

ॐ ह्रीं श्री कृष्णमति मुनिसुव्रत कन्दर्प तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानमति जिन भूतकाल के, इक्कीसवें जिन अविकारी।
नमिनाथ जिन वर्तमान के, श्वेत कमल लक्षण धारी।।
श्री जयनाथ जिनेश्वर भावी, करते हम प्रभु का अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।21।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमति नमिनाथ जयनाथ तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतकाल में बाइसवें जिन, शुद्धमतिजी कहलाए।
वर्तमान के नेमिनाथजी, तीर्थंकर पदवी पाए।।
श्री विमल तीर्थंकर भावी, जिनका हम करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।22।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धमति नेमिनाथ विमल तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री भद्र जिनवर तेईसवें, भूतकाल के मंगलकार।
पार्श्वनाथ जी वर्तमान के, जिनको वंदन बारम्बार।।

दिव्यवाद जिन कहे अनागत, जिनका हम करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।23।।

ॐ ह्रीं श्री भद्र पार्श्वनाथ दिव्यवाद तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्तवीर्य अन्तिम तीर्थंकर, भूतकाल में हुए महान्।
वर्तमान के वर्धमान जिन, की है सिंहराज पहिचान।।
भावी जिन हैं अनन्तवीर्य जी, जिनका हम करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।24।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तवीर्य वर्धमान अनन्तवीर्य तीर्थंकरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतकाल अरु वर्तमान के, और अनागत के चौबीस।
भरत क्षेत्र में तीर्थंकर के, चरणों झुका रहे हम शीश।।
मंगलकारी विघ्न विनाशक, जिन का हम करते अर्चन।
विशद भाव से जिन चरणों में, करते हैं शत्-शत् वंदन।।25।।

ॐ ह्रीं अतीत अनागत वर्तमान काल संबंधी समस्त तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

****

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पाव अनर्घ्य पद पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत आदिक से, हम यह अर्घ्य बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पारसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन यह अर्घ्य बनाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत सरस्वती देव्यैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

श्री शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ तीर्थंकर पूजा

(स्थापना)

नगर हस्तिनापुर में जन्में, शान्ति कुन्थु श्री अरह जिनेश।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, त्रयपदधारी हुए विशेष।।
हुए चार कल्याणक जिनके, नगर हस्तिनापुर के धाम।
आह्वानन् करते हम उर में, क्रमशः करके चरण प्रणाम।।

दोहा- **पूजा करते आपकी, हे त्रैलोकी नाथ!।**
शिवपद हमको दीजिए, झुका रहे पद माथ।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर जिनेश्वरा:! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्। ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर जिनेश्वरा:! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर जिनेश्वरा:! अत्र सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

वीतराग की राह प्राप्त कर, तुम शिवपुर की ओर चले।
त्रय रोगों के नाशक उर में, रत्नत्रय के फूल खिले।।
शांति कुंथु जिन अरनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरनाथ तीर्थंकरेभ्यः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भावों में शीतलता लाकर, जीवन तरु को महकायें।
चन्दन अर्पित करके जिन पद, भवाताप को विनशायें।।
शांति कुंथु जिन अरनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरनाथ तीर्थंकरेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पर का कर्त्ता माना निज को, निज पद को बिसराया है।
अक्षय पद शास्वत है मेरा, उसको कभी ना पाया है।।
शांति कुंथु जिन अरनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरनाथ तीर्थंकरेभ्यः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रंग बिरंगे पुष्प लोक में, अपनी आभा बिखराते।
कामबाण की बाधा हरने, पुष्प चढ़ाकर हर्षाते।।
शांति कुंथु जिन अरनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरनाथ तीर्थंकरेभ्यः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा तृषा का रोग लगा है, जिससे भारी दुख पाये।
यह नैवेद्य चढ़ाकर भगवन, क्षुधा मिटाने हम आए।।
शांति कुंथु जिन अरनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरनाथ तीर्थंकरेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दीप तुम ज्ञान ज्योति से, ज्योती मेरी जग जाए।
मिथ्या मोह महातम अपना, यहाँ नशाने हम आए।।
शांति कुंथु जिन अरनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरनाथ तीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाने से अग्नी में, नभ मण्डल को महकाए।
अष्ट कर्म का भेद आवरण, शिव पद पाने हम आए।।
शांति कुंथु जिन अरनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरनाथ तीर्थंकरेभ्यः अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु ऋतु के फल खाकर भी हम, तृप्त नहीं हो पाते हैं।
मोक्ष महाफल पाने हे जिन, फल यह चरण चढ़ाते हैं।।
शांति कुंथु जिन अरनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरनाथ तीर्थंकरेभ्यः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

चतुर्गती में सुख दुख पाकर, बारम्बार भ्रमाए हैं।
अष्टम वसुधा पाने चरणों, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।।
शांति कुंथु जिन अरनाथ की, महिमा को हम गाते हैं।
चरण कमल में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुंथु अरनाथ तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

भादव कृष्ण सप्तमी को प्रभु, शांतिनाथ जिन गर्भ लिए।
श्रावण कृष्ण दशें कुन्थू जिन, गर्भ कल्याणक प्राप्त किए।।
फाल्गुण कृष्ण तीज अर स्वामी, गर्भ अवस्था शुभ पाई।
गर्भ शोध को इन्द्राज्ञा से, अष्ट कुमारिकाएँ आईं।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, शांतिनाथ ने जन्म लिया।
एकम शुक्ल वैसाख कुन्थु जिन, ने भू पर अवतार लिया।।
मंगसिर शुक्ला चतुर्दशी को, जन्मे अरनाथ भगवान।
सुरगिरि पे सुर न्हवन कराए, विशद मनाए जन्म कल्याण।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, तपधारे श्री शांतीनाथ।
एकम शुक्ल वैसाख कुन्थु जिन, संयमधारी हुए सनाथ।।
मंगसिर शुक्ला तिथि दशमी को, अरनाथ संयम धारे।
इन्द्रों ने तव जिन चरणों में, भक्ति से बोले जयकारे।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी तपकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान शांति जिन शुक्ला, पौष दशे को प्रगटाए।
चैत्र शुक्ल तृतीया को कुन्थू, जिनवर विशद ज्ञान पाए।।

कार्तिक सुदि बारस को अर जिन, पाए अनुपम केवल ज्ञान।
विशद ज्ञान हो प्राप्त हमें, प्रभु करते हम चरणों गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी केवलज्ञान प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, शांति प्रभू पाए निर्वाण।
एकम् सुदि वैसाख कुन्थु जिन, सिद्ध शिला पर किए प्रयाण।।
अरनाथ जी चैत अमावश, को पहुँचे थे मुक्तीधाम।।
हम भी यही भावना लेकर, करते चरणों विशद प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वबंधन विमुक्त विघ्न विनाशक सर्वमंगलकारी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांति कुन्थु अरनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

शांति कुंथु जिन अरह जी, हुए त्रैलोकी नाथ।
गाते है जयमाल हम, चरण झुकाते माथ।।

चौपाई

भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, आर्य खण्ड है मंगलकारी।
जिसमें भारत देश बताया, उत्तर प्रदेश श्रेष्ठ शुभ गाया।।1।।
मेरठ जिला हैं जिसमें भाई, पास हस्तिनापुर सुखदाई।
ऋषभ नाथ जी जहाँ पे आये, नृप श्रेयांस आहार कराए।।2।।
यह पावन भूमी सुखदायी, त्राय तीर्थंकर जन्मे भाई।
शान्ति कुन्थु जिन अरह कहाए, यहाँ चार कल्याणक पाए।।3।।
अश्वसेन राजा कहलाए, रानी ऐरा देवी पाए।
जिनके गृह में मंगल छाए, जन्म शांति जिनवर जी पाए।।4।।
लाख वर्ष आयु के धारी, तप्त स्वर्ण सम थे अविकारी।
चालिस धनुष रही ऊँचाई, हिरण चिन्ह जिनका है भाई।।5।।
पच्चिस सहस वर्ष तक स्वामी, रहे मण्डलेश्वर जिन नामी।
चक्रवर्ती पद स्वामी पाए, पच्चिस सहस वर्ष कहलाए।।6।।

Created by Universal Document Converter

कामदेव पद पाने वाले, तीर्थंकर जिन रहे निराले।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, हुए आप मुक्ती पथ गामी।।7।।
पञ्च हजार वर्ष फिर जानो, साधिक पल्य गये फिर मानो।
सूरसेन श्री मति के भाई, सुत जन्मे कुन्थु जिन राई।।8।।
सहस पञ्चानवे वर्ष की स्वामी, आयु पाये अन्तर्यामी।
पैंतीस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई।।9।।
बकरा लक्षण पग में पाये, त्रय पद के धारी कहलाए।
पौने चौबिस सहस बताए, महामण्डलेश्वर पद पाए।।10।।
इतने वर्षों तक फिर जानो, चक्रवर्ति पद पाए मानो।
संयम आप स्वयं ही पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।11।।
कर्म घातिया आप नशाए, केवल ज्ञान स्वयं प्रगटाए।
गिरि सम्मेद शिखर पे आये, कूँट ज्ञानधर से शिव पाए।।12।।
ग्यारह सहस हीन फिर जानो, एक सहस्र कोटि पहिचानो।
इतना हीन पाव पल्य जाये, जन्म अरह जिनवर जी पाए।।13।।
पिता सुदर्शन जी कहलाए, मात मित्र सेना जी गाए।
सहस चुरासी वर्ष की भाई, आयू अरह नाथ ने पाई।।14।।
तीस धनुष तन की ऊँचाई, लक्षण मीन रहा सुखदायी।
इक्कीस सहस वर्ष शुभकारी, रहे मण्डलेश्वर पद धारी।।15।।
इक्कीस सहस वर्ष तक जानो, चक्रवर्ति पद पाया मानो।
कामदेव प्रभु जी कहलाए, तीर्थंकर पद पा शिव पाए।।16।।
गिरि सम्मेद शिखर पे आये, खड्गासन से मोक्ष सिधाए।
जिन चरणों हम शीश झुकाते, विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाते।।17।।

दोहा- त्रय रत्नों को प्राप्त कर, बने धर्म के ईश।
सुर नर मुनि तव चरण में, सदा झुकाते शीश।।

ॐ ह्रीं श्री शांति कुन्थु अरनाथ तीर्थंकरेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- करते हैं हम वंदना, तव चरणों जिनराज।
हम भी पाए हे प्रभो! मोक्ष महल का ताज।।

(इत्याशीर्वाद) (पुष्पांजलि क्षिपेत)

समुच्चय महा-अर्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वंदन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक , रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नंदीश्वर , की अर्चा हम करें विशेष।।

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, विशद भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नम: प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नम:। दर्शन-विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नम:। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नम:। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभयो नम:। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नम:। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नम:। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नम:। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नम:। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नम:। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नम:। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नम:, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नम:।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Created by Universal Document Converter

शांतिपाठ

(शम्भू छंद)

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांति पाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अंजान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विर्सजन भाव से, क्षमा करो जिनदेव।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् / ठोने में पुष्प क्षेपण करें

आशिका लेने का पद

दोहा- पूजा कर आराध्य की, धरें आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष।।

आशिका ग्रहण करें

द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र चालीसा

दोहा- अरहंतों को नमन् कर,सिद्धन करूं प्रणाम।
गुरुदत्तादि ऋषीश का, ले सुखकारी नाम ।।
सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि, अतिशयकारी धाम।
चालीसा गाते यहाँ, पाने मोक्ष ललाम।।

(चौपाई)

भारत देश में जंबूद्वीप, भरत क्षेत्र है सिंधु समीप।।1।।
सुंदर सोहे धनुषाकार, आर्य खंड जिसमें शुभकार।।2।।
भरत देश में मध्य प्रदेश, जिला छतरपुर रहा विशेष।।3।।
जिसमें द्रोणागिरि शुभकार, सिद्धक्षेत्र है मंगलकार।।4।।
दो सरिता के मध्य जो आय, अतः द्रोणगिर क्षेत्र कहाय।।5।।
कहते लोग सेंधपा ग्राम, सिद्धभूमि जो है अभिराम।।6।।
श्री मुनिसुव्रत जी तीर्थेश, हुए बीसवें परम जिनेश।।7।।
जिनके काल में हुए श्रीराम, जिनका रहा पद्म शुभ नाम।।8।।
उसी समय की है ये बात, तब से तीरथ है विख्यात।।9।।
राजा करने चला शिकार, पीछा सिंह का किया अपार।।10।।
गुफा में घुस जाता है शेर, उसे शिकारी लेते घेर।।11।।
गुफा में तभी लगा के आग, सभी वहाँ से जाते भाग।।12।।
जलकर मर जाता है शेर, लगती नहीं है उसको देर।।13।।
मरकर शेर हुआ था किसान, खेती करके उगाए धान।।14।।
राजा लेते संयम धार, हो जाते हैं मुनि अनगार।।15।।
हस्तिनापुर से किए बिहार, करने लगे जगत उद्धार।।16।।
मुनिवर करने लगते ध्यान, पास में आके कहे किसान।।17।।
पत्नी लिए कलेवा आय, उसको दीजो आप बताए।।18।।
जाता हूँ मैं लेने बैल, पश्चिम की है मेरी गैल।19।।

Created by Universal Document Converter

पत्नी को ना मिला किसान, हुई बहुत ही जो हैरान।।20।।
पूँछा उसने आके पास, ध्यानालीन थे मुनिवर खास।।21।।
क्रोध से क्रोधित हुआ किसान, खोया उसने अपना ज्ञान ।।22।।
सोमिल तभी गुफा में जाय, रुई लपेट कर दिया जलाय।।23।।
आग से जलने लगा शरीर, किंतु मुनिवर धारे धीर।।24।।
आप लगाए शुक्लध्यान, तुरत जगाए केवलज्ञान ।।25।।
कर्म घातिया किए विनाश, सिद्ध शिला पर कीन्हें वास।।26।।
शाश्वत सुख पाए अविराम, जिनके चरणों विशद प्रणाम।।27।।
साढ़े आठ कोटि मुनिराज, पाए सिद्धशिला का ताज ।।28।।
गिरि पे मंदिर रहे विशाल, सुर नर जहाँ झुकाएँ भाल।।29।।
तीर्थ वंदना करते आन, करने को आतम कल्याण।।30।।
शांति कुंथु अर जिन तीर्थेश, का जिनगृह भी बना विशेष ।।31।।
त्रैकालिक जिनवर चौबीस, जिन पद झुका रहे हम शीश।।32।।
श्री गुरुदत्त की प्रतिमा श्रेष्ठ, चरण गुफा में रहे यथेष्ठ।।33।।
रहा तलहटी में जिनधाम, आदिनाथ पद करें प्रणाम।।34।।
आश्रम में श्री पार्श्व जिनेश, चौबीसी भी रही विशेष।।35।।
विराग सिंधु का पद आचार्य, हुआ यहाँ पे अपरंपार।।36।।
समयसागर जी दीक्षा पाय,विश्वजीत जी भी मुनिराय ।।37।।
विशद सिंधु विश्वकीर्ति मुनीश, दीक्षा पाए यहाँ ऋशीष।।38।।
किए संत कई वर्षायोग, मिटे जहाँ से भव के रोग।।39।।
भाव सहित जो भी सिर नाय, मन वांछित फल वह पा जाय।।40।।

दोहा– द्रोणागिर जी क्षेत्र का, चालीसा चालीस।
पढ़े भाव से जो 'विशद', विनत झुकाए शीश।।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य वह, पाए सौख्य अपार।
इस भव के सुख प्राप्त कर, पाए भवदधि पार।।

द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र की आरती

तर्ज– आओं बच्चों तुम्हें दिखाए.....।

जगमग–जगमग आरति कीजे, द्रोणागिरि शुभ धाम की।
साढ़े आठ कोटि मुनिवर के, पावन पद निर्वाण की।।
वंदे जिनवरम्–वंदे जिनवरम्, वंदे गुरुवरम्–वंदे गुरुवरम्।।टेक।।
रहा तलहटी में जिन मंदिर, आदिनाथ मंगलकारी–2।
आश्रम में श्री पार्श्वनाथ की, प्रतिमा है संकटहारी–2।।
बनी हुई चौबीसी अनुपम, उनके जिन भगवान की।
जगमग–जगमग आरति.....।।1।।

गिरि के उपर बने जिनालय, गगन मध्य शोभा पाएँ–2।।
चरण चिंह हैं चौबीसी के, जिनकी की भी महिमा गाएँ–2।।
गुरुदत्त उपसर्ग विजेता, के शुद्धातम ध्यान की।
जगमग–जगमग आरति.....।।2।।

शांति कुंथु जिन अरहनाथ जी, बृहद् जिनालय में सोहें–2।
त्रैकालिक जिनवर की प्रतिमा, भव्यों के मन को मोहें–2।।
मानस्तंभ बना है आगे, चारों दिश भगवान की।
जगमग–जगमग आरति.....।।3।।

गुरुदत्त जिनवर की प्रतिमा, सोहे मंगलकारी जी–2।
चरण शोभते गुफा के अंदर,अनुपम शोभाकारी जी–2।।
'विशद' आरती करें कराएँ, सिद्धों के शुभ धाम की।
जगमग–जगमग आरति.....।।4।।

Created by Universal Document Converter

श्री आदिनाथ की आरती

(तर्ज - आज करे हम.....)

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।टेक।।
जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।1।।
षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर-नारी सब नाचे गाये, जय जयकार लगाए।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।2।।
रत्नत्रय पाकर हे स्वामी, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर तुमने, केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।3।।
यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवें जब तक, शरण आपकी आवें।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।4।।
जिन मंदिर में भक्ति भाव से, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।5।।

श्री शांतिनाथ की आरती

तर्ज - वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्

जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पदधारी गुणवान की।।
वन्दे जिनवरम-2।।टेक।।
नगर हस्तिनापुर में जन्में, मात पिता हर्षाए हैं-2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, के जो लाल कहाए हैं-2
द्वार द्वार पर बजी बधाई, जय हो कृपा निधान की।
जगमग-जगमग.....।।1।।
जान के जग की नश्वरता को, जिनवर दीक्षा पाई थी-2
त्याग तपस्या देख आपकी, यह जगती हर्षाई थी-2
देवों ने भी महिमा गाई, नाथ आपके ध्यान की।
जगमग-जगमग.....।।2।।
हर संकट में जग के प्राणी, प्रभू आपको ध्याते हैं-2
भाव सहित गुण गाते नत हो, पूजा पाठ रचाते हैं-2
महिमा गाई है संतों ने, वीतराग विज्ञान की।
जगमग-जगमग.....।।3।।
सारे जग में प्रभु आपने, अतिशय बड़ा दिखाया है-2
शांती देकर के भक्तों में, चमत्कार फैलाया है-2
हर दुखियों का संकट हरती, महिमा अतिशयवान की।
जगमग-जगमग.....।।4।।
जिन मंदिर में शांती प्रभु की, आरति करने आए हैं-2
चरण शरण के भक्त मनोहर, द्वीप जलाकर लाए है-2
'विशद' करें हम जय-जयकारे, अतिशय बिम्ब महान की।
जगमग-जगमग.....।।5।।

Created by Universal Document Converter

शांति-कुन्थु-अरहनाथ की आरती

हे शांति! कुन्थु अरनाथ, जोड़कर अपने हाथ।
तुम्हें प्रभु ध्याएं, हम सादर शीश झुकाएं।।

प्रभु हस्तिनागपुर जन्म लिए, जो सूर्यवंश को धन्य किए।
पद मुक्ता रहे हम माथ, तुम्हें.....1

जो कामदेव चक्री गाए, औ तीर्थकर पदवी पाए।
त्रय पदवी धारी नाथ, तुम्हें.....2।

प्रभु यथा नाम गुणधारी है, जो वीतराग अविकारी हैं।
दो शिव पद में प्रभु साथ, तुम्हें.....3।

जो पावन द्वीप जागते है अरु भाव से आरती गाते है।
वे पनते श्री के नाथ, तुम्हें.....4।

जो शरण आपकी आतें है, वे इच्छित फल को पाते है।
हम जोड़ विशद द्वय हाथ, तुम्हें.....5।

हे शांति कुन्थु अर जिन स्वामी है बौलखेड़ा के शिव गयी।
तव चरण झुकाए माथ, तुम्हें.....6।

जिन-जिनने जिनप्रभु को ध्याया, तुमने इच्छित फल पाया।
हे त्रिभुवन! पति जिन नाथ! तुम्हें.....7।

श्री गुरुदत्त जिनेन्द्र की आरती

तर्ज- हो जिनवर ,हम सब.....।

श्री गुरुदत्त के चरण कमल की, आरति मंगलकारी-2।
पावन दीप जलाकर करते-2, जिनवर के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारें मंगल आरती-2।
परम दिगंबर मुनि बनकर के, द्रोणागिर में आए-2।
मुक्ती पथ के राही अनुपम-2, आतम ध्यान लगाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें मंगल आरती-2।।1।।
सहन किए उपसर्ग घोर जो, कर्म घातिया नाशे-2।
चिच्चैतन्य स्वरूपी चिन्मय-2, केवलज्ञान प्रकाशे।।
हो जिनवर, हम सब उतारें मंगल आरती-2।।2।।
सिद्धक्षेत्र द्रोणागिर की, गुफा से मोक्ष सिधाए-2।
विशद भाव से शिव पद पाने-2, द्वारे हम भी आए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें मंगल आरती-2।।3।।
लघु सम्मेद शिखर का वंदन, करने हम भी आए।
वांछित फल हो प्राप्त हमें-2, भाव बनाकर आए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें मंगल आरती-2।।4।।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य प्रदायी, चरण प्रभू के ध्यायें-2।
दीप जलाकर आरति करके-2,चरणों शीश झुकाएँ।।
हो जिनवर, हम सब उतारें मंगल आरती-2।।5।।

Created by Universal Document Converter

द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र गौरव गाथा

आल्हा छंद

सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिर पावन, मध्यप्रदेश में रहा महान्।
लघु सम्मेद शिखर कहलाए, सिद्ध क्षेत्र जो महिमावान।
गुरुदत्तादि मुनीश्वर अनुपम, साढ़े आठ करोड़ प्रमाण।
मोक्ष महापदवी को पाए,क्षेत्र कहाए जो निर्वाण।।1।।
श्री गुरुदत्त के जीवन का हम, करते हैं संक्षेप कथन।
देवगति से चयकर आए, राजा के घर लिए जनम।।
इक विद्याधर ने मरकर के, पाई यहाँ पे सिंह पर्याय।
राजा ने उत्पाती सिंह को, गुफा के अंदर दिया जलाय।।2।।
ब्राह्मण बना कपिल सिंह मरके, खेती का करता था काम।
सिंह पर्याय से आया था तो, उसके रहे क्रूर परिणाम।।
चिंतन करके गुरुदत्त ने, जाना यह संसार असार।
हृदय जगा वैराग्य अतः वे,लेते हैं जिन दीक्षा धार।।3।।
कर बिहार मुनिवर जी आके, खेत में करने लगते ध्यान।
चलकर तभी पास में आके, मुनि से बोला कपिल किसान।।
मेरी पत्नी भोजन लाए, तो उससे कहना हे भ्रात!।
खेत दूसरे गया हुआ है ,कहना उससे मेरी बात।।4।।
पत्नी भोजन लेकर आई, किंतू पाया नहीं किसान।
मुनि से पूछा पत्नी ने तब, मौन लगाए बैठे ध्यान।

पत्नी लौट के घर आ जाती, करती अपने घर का काम।
लौट किसान खेत पर आया, भूख से व्याकुल हुआ महान् ।।5।।
घर आके पत्नी से बोला, लाई क्यों न भोजन पान।
पत्नी बोली हमने खोजा, खेत पे तुमको हर स्थान।।
वहाँ पे बैठा हुआ था कोई, उससे पूछा पास में जाय।
किंतू उसने नहीं बताया, अतः कलेवा वापस लाय।।6।।
क्रोधित हुआ किसान लौटकर, जाता है फिर उस स्थान।
पुनः खोजता हुआ गुफा में,जाता है फिर वही किसान।।
भूख प्यास से जला हुआ मैं, तेरे कारण से हे नीच!।
अतः जलाऊँगा मैं तुझको,इसी समय अग्नी के बीच।।7।।
रुई लपेट कर आग लगा दी, मुनि का जलने लगा शरीर।
आत्म ध्यान में लीन मुनीश्वर, धारण करते मन में धीर।।
धू-धूकर मुनि का तन जलता ,सहन किए उपसर्ग मुनीश।
शुक्लध्यान आरोहण करके, निज स्वभाव प्रगटाए ऋषीश।।8।।
कर्म घातिया नाश किए तब, प्रकट हुआ शुभ केवलज्ञान।
देवों ने जयकारा बोला,सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिर आन।।
दृश्य देखकर के किसान तब, मन में भारी हुआ अधीर।
पश्चाताप किया जो भारी, बहा नयन से जिसके नीर।।9।।
भव्य जीव कई जैनधर्म शुभ, धार के बोले जय-जयकार।
प्रभु के चरणों वंदन कीन्हें, जग के प्राणी बारंबार।।
मुनिसुव्रत के काल से लेकर, पूजा जाए तीर्थ महान। ।

Created by Universal Document Converter

बने जिनालय गिरि के ऊपर ,भव्य जीव करते यशगान।।10।।
दूर-दूर से यात्री आकर, करें वंदना बारंबार।
अपने जो सौभाग्य जगाए, पाने को भवदधि से पार ।।
संत साधना किए यहाँ कई, कर्म निर्जरा कीन्हें घोर।
निज चेतन रस के आस्वादी, हुए स्वयं जो आत्म विभोर।।11।।
आठ नंबर बानवे सन् को,बने विराग सिंधु आचार्य।
ब्रह्मचर्य व्रत धारा हमने, किया मुक्ति का अनुपम कार्य ।।
सन् उन्नीस सौ छियानवे में फिर, हुआ यहाँ पर पंचकल्याण।
दीक्षा देकर गुरुदेव ने, विशदसागर रक्खा था नाम।।12।।
अन्य मुनी भी बने यहाँ पर, समयसागर जो है आचार्य ।
विश्वजीत मुनि विश्वकीर्ति जी, दीक्षा पाए अपरंपार।।
ऐलक श्री विभ्रमसागर जी, सन् उन्नीस सौ बानवे वर्ष।
मोक्षमार्ग में कदम बढ़ाए, मन में अतिशय जागा हर्ष ।।13।।
वर्षायोग किए साधू कई ,किए साधना अपरंपार।
स्व-पर के उपकारी होकर, किए तीर्थ का जो उद्धार।।
'विशद' भावना भाते हैं हम, तीर्थ का होवे पूर्ण विकाश।
जो भी यात्री आवें उनकी, पूरी होवे मन की आश।।14।।
दोहा- पूरी होवे कामना, करके जिन गुणगान।
तप करके इस क्षेत्र से, पावें पद निर्वाण।।

मस्तकाभिषेक का भजन

तर्ज- बाहुबली भगवान का मस्तकाभिषेक....।
शांतिनाथ भगवान का, मस्तकाभिषेक।
मस्तकाभिषेक-महामस्तकाभिषेक।।टेक।।
शांती की चाह सभी को, नर पशु हों या देव।
करते हैं पुरुषार्थ जगत जन, पाने शांति सदैव।।
शांति भाव बिन शांति मिले ना-2।
निज धर्म का फूल खिले ना-2।।
धर्म के फल से सुख शांती हो, जोड़े पुण्य अनेक।
मस्तकाभिषेक-महामस्तकाभिषेक।।1।।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदायक, पूजे यह संसार।
तीनों लोक के प्राणी करते, जिनकी जय-जयकार।
संकट बाधा कुछ भी आए-2।
किंतु धर्म को नहीं भुलाए-2।।
भक्ती के फल से जीवन में, भोगे भोग अनेक।
मस्तकाभिषेक-महामस्तकाभिषेक।।2।।
कामदेव चक्री पद पाके,बने आप तीर्थेश।
तीन पदों के धारी अनुपम, जग में हुए विशेष।।
कर्मों का हो जाता है क्षय-2,।
सुपद प्राप्त होता मृत्युंजय-2।।
'विशद' भाव से आज सभी मिल, करते हैं अभिषेक।
मस्तकाभिषेक-महामस्तकाभिषेक।।3।।
शांतिनाथ भगवान का मस्तकाभिषेक।।
धन्य-धन्य वे भक्त यहाँ ,जो करते हैं अभिषेक।
मस्तकाभिषेक-मस्तकाभिषेक।।

Created by Universal Document Converter